साहित्य अकादमी की वेबलाइन पर डॉ.रसराज ने किया संस्कृत काव्यपाठ

प्रयागराज, २५ मई। साहित्य अकादमी,नई दिल्ली द्वारा वेबलाइन साहित्य-सीरीज के अन्तर्गत सोमवार को अपराह्न ४ बजे से संस्कृत कविसमवाय का आयोजन किया गया जिसमें प्रयागराज से इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में संस्कृतविभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ.राजेन्द्र त्रिपाठी 'रसराज' को संस्कृतकवि के रूप में काव्यपाठ करने करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इनके साथ में सागर वि.वि.से संस्कृत के सहायक आचार्य डॉ.नौनिहाल गौतम, और भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय ,हरिद्वार से संस्कृत के सुप्रतिष्ठित विद्वान् व संस्कृत कवि डॉ.निरंजन मिश्र की भी सहभागिता हुई। इन तीनों कवियों को साहित्य अकादमी की ओर से इस कविसमवाय के लिये चयनित किया गया था। डॉ.रसराज ने अपनी संस्कृत कविता के माध्यम से इस समय पूरे विश्व में चल रहे कोरोनासंक्रमण को लक्ष्य कर एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया जिसमें पूरे विश्व में व्याप्त कोरोना संक्रमण के प्रभाव और शासन प्रशासन द्वारा घोषित लॉकडाउन ,घर में निवास और हॉथ को धुलते रहने अनेक उपायों को कविता के माध्यमें से भी जनजागरण किये जाने का प्रयास किया गया है।

पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -,

करोनासंकटे विश्वे ,विषाणुर्मारयति लोकम्। असाध्यो?यं महारोगो मनुष्यो धारयति शोकम्।१।

कुतो जातः कथं व्याप्तः, समस्ते दीर्घलघुराष्ट्रे। प्रवासे प्राणिनो हत्वा पिशाचः पीडयति मोदम्।२।

हरिद्वार के सुकवि डॉ. निरंजन मिश्र की-

किं जल्पनेन औचित्यं नहि वर्तते कलियुगे सत्यस्य किञ्चित्सखे, वाच्ये यन्त्रितमानसस्य पुरतो व्यंग्यस्य किं कीर्तनम्।

विद्या यत्र न वैष्णवी गुणवती रत्नार्जनैस्तत्र किं, दण्डेनैव हि यन्त्रणीयमहिषस्याग्रेत्रस्ति काव्येन किम्।।

दूसरी कविता

कोरोना स्तुति पर प्रस्तुत किया।

सागर विवि. के नौनिहाल गौतम ने अपनी संस्कृत में हाइकू जैसी रचना प्रस्तुत कर अनेक विषयों को रेखांकित किया।

गुर्वालोकः-

संसाराम्बुधौ, यान्ति पोतवच्छिष्याः

गुर्वालोकिताः।।

विज्ञापनम्- निर्वाचनेषु नेतारो ज्ञापयन्ति स्वकान् गुणान्। जनो जानाति तत्सत्यं वेश्यामङ्गलसूत्रवत्।।

हरिद्वार के संस्कृत कवि डॉ निरंजन मिश्र ने अनेक विषयों पर अपने संस्कृत छन्दों को प्रस्तुत किया।

किं जल्पनेन-औचित्यं नहि वर्तते कलियुगे सत्यस्य किञ्चित्सखे। वाच्ये यन्त्रितमानसस्य पुरतो व्यंग्यस्य किं कीर्तनम्। विद्या यत्र न वैष्णवी गुणवती रत्नार्जनैस्तत्र किं दण्डेनैव हि यन्त्रणीयमहिषस्याग्रेत्रस्ति काव्येन किम्।।

इस लॉकडाउन के कारण सरकार की अनेक संस्थाएँ इसी प्रकार ऑन लाइन अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। कार्यक्रम के संयोजक श्री सुरेश बाबू ने संस्कृत कविसमवाय का संयोजन एवं संचालन किया। साहित्य अकादमी के सचिव श्रीनिवास राव के प्रति सादर आभार ज्ञापित किया गया।

CMYK